कुँवर नारायण 3

जन्म – कवि कुँवर नारायण का जन्म 19 सितंबर, सन् 1927 को उत्तर प्रदेश में हुआ।

प्रमुख रचनाएँ : इनकी प्रमुख रचनाएँ चक्रव्यूह (1956), परिवेश : हम तुम, इन दिनों, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं (काव्य संग्रह); आकारों के आस-पास (कहानी-संग्रह); आत्मजयी (प्रबंध काव्य); आज और आज से पहले (समीक्षा); मेरे साक्षात्कार (सामान्य) हैं।

प्रमुख पुरस्कार : उन्हें उनके साहित्य लेखन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, व्यास सम्मान, लौहिया सम्मान, कुमारन आशान पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार, कबीर सम्मान आदि पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा चुका है।

साहित्यिक विशेषताएँ :- गर्द से ढँकी हर पुरानी किताब को खोलने की बात कहने वाले कुँवर नारायण ने सन् 1950 के आस-पास अपने काव्य लेखन की शुरुआत की। उन्होंने कविताओं के साथ-साथ चिंतनपरक लेख, कहानियाँ और सिनेमा तथा अन्य कलाओं पर आलोचनात्मक समीक्षाएँ भी लिखीं हैं, परंतु कविता की विधा को ही उनके सृजन-काल में हमेशा प्राथमिकता प्राप्त रही। नयी कविता के उस दौर में, जब प्रबंध काव्य का स्थान खंडकाव्य की लंबी कविताएँ लेने लगीं तब कुँवर नारायण ने आत्मजयी जैसा प्रबंध काव्य रचकर अपार ख्याति अर्जित की। आलोचकों का मानना है कि उनकी "कविता में व्यर्थ का उलझाव, अखबारी सतहीपन और बेचारिक धुंध के स्थान पर संयम, परिष्कार और साफ-सुथरापन है।" विषय और भाषा की विविधता उनकी कविताओं का विशेष गुण है। उनमें गद्य का खुरदरापन भी देखने को मिलता है तो उसका सहज सौंदर्य भी।

2020/7/20 16:14

Scanned with CamScanner

Date:
Page:

कविता के बहाने

Q. इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या हैं?

→ प्रस्तुत कविता में 'सब घर एक कर देने के माने' हैं- जिस प्रकार बच्चों के लिए सभी घर समान होते हैं, उसे जहाँ प्यार मिलता है वही घर उसका हो जाता है, उसी प्रकार कवि भी अपने-पराये की भावना त्यागकर सबको समझो समझकर काव्य की रचना करता है।

Q. 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है?

→ कविता के संदर्भ में 'उड़ने' का अर्थ भावाभिव्यक्ति तथा 'खिलने' का अर्थ प्रभाव है।

Q. कविता और बच्चों को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

→ कविता में विचारों की अभिव्यक्ति स्वच्छ और निश्चल होती है। उसमें किसी प्रकार की स्वार्थ-भावना नहीं होती है। इसी प्रकार बच्चों का मन भी एकदम निश्चल और निस्वार्थ भाव से प्रेरित होता है। उसके लिए संसार के सभी व्यक्ति अपने होते हैं, इसीलिए कविता और बच्चों को समानांतर रखा गया है।

Q. कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं?

→ कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने' का तात्पर्य है- कविता का प्रभाव हमेशा एक जैसा जैसा रहना और कभी भी कम न होना।

Q. 'भाषा को सहूलियत' से बरतने से क्या अभिप्राय है?

→ 'भाषा को सहूलियत' से बरतने से तात्पर्य है- विषयानुरूप नियत भाषा का प्रयोग करना ताकि अर्थ की अभिव्यक्ति में किसी प्रकार की कोई अस्पष्टता अथवा अ क्लिष्टता न आए।

2020/7/20 16:14

Scanned with CamScanner

Q. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है' कैसे ?

→ यह सच है कि बात और भाषा का परस्पर गहरा संबंध है, परंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है क्योंकि भाषा का सही प्रयोग न होने से अर्थ स्पष्ट नहीं होता। कभी-कभी यदि सीधी-सादी, सरल बात के लिए साधारण भाषा के स्थान पर किसी विशिष्ट भाषा का प्रयोग किया जाए तो यह अर्थ में अस्पष्टता और जटिलता उत्पन्न करता है। अतः बात के लिए नियत शब्दों का प्रयोग न करने से अर्थ अस्पष्ट हो जाता है।

Q. बात (कथ्य) के लिए नीचे दी गई विशेषताओं का उचित बिंबों/मुहावरों से मिलान करें।

बिंब/मुहावरा	विशेषता
क) बात की चूड़ी मर जाना	कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य
ख) बात की पेंच खोलना	बात का पकड़ में न आना
ग) बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना	बात का प्रभावहीन हो जाना
घ) पेंच को कील की तरह ठोंक देना	बात में कसावट का न होना
ङ) बात का बन जाना	बात को सहज और स्पष्ट करना

बिंब/मुहावरा	विशेषता
क बात की चूड़ी मर जाना	बात का प्रभावहीन हो जाना
ख बात की पेंच खोलना	बात को सहज और स्पष्ट करना
ग बात की शरारती बच्चे की तरह खेलना	बात का पकड़ में न आना
घ पेंच को कील की तरह ठोंक देना	बात में कसावट का न होना
ङ) बात का बन जाना	कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना